

डॉ. राममनोहर लोहिया द्वारा प्रतिपादित "**भारत की संकल्पना (Ideas of India)**" उनकी समाजवादी विचारधारा, भारतीय सांस्कृतिक जड़ों, ग्रामीण चेतना और सामाजिक न्याय की अवधारणा पर आधारित थी। लोहिया का भारत न तो केवल पश्चिमी मॉडल का अनुकरण करता है, न ही केवल परंपरा का अनुशीलन – वह एक **जनवादी, विकेंद्रीकृत, समतामूलक और भारतीय चेतना से ओतप्रोत राष्ट्र** था।

डॉ. लोहिया की भारत की संकल्पना (Ideas of India by Ram Manohar Lohia)

1. चार स्तंभों पर आधारित समाजवादी भारत (Chaukhamba Raj)

लोहिया ने शासन की विकेन्द्रीकृत व्यवस्था का सपना देखा, जिसे उन्होंने "**चौखम्भा राज**" कहा। इसमें सत्ता के चार स्तर होते हैं:

- ग्राम (गांव स्तर)
- जिला
- प्रांत
- राष्ट्र

उनका मानना था कि जब तक शासन की शक्तियाँ जनता के सबसे निचले स्तर तक नहीं पहुँचेंगी, तब तक भारत में वास्तविक लोकतंत्र नहीं आ सकता।

“अधिकार नीचे जाओ, जिम्मेदारी ऊपर आओ।”

2. समतामूलक समाज का सपना

लोहिया एक **वर्गविहीन, जातिविहीन और लिंग-समान समाज** की कल्पना करते थे। उन्होंने आर्थिक, सामाजिक और शैक्षणिक असमानताओं को दूर करने के लिए:

- जातिवाद का विरोध किया
- आरक्षण की वकालत की (समान अवसरों के लिए)
- महिलाओं की बराबरी के अधिकार पर जोर दिया

"समानता के बिना स्वतंत्रता एक भ्रम है।"

3. भारतीय संस्कृति की पुनर्व्याख्या

लोहिया ने भारतीय परंपराओं को त्यागने के बजाय उन्हें **नवीन संदर्भों में पुनर्परिभाषित** करने की आवश्यकता पर बल दिया।

उनका विचार था कि भारतीय समाज का आधुनिकीकरण भारतीय मूल्यों के अनुरूप होना चाहिए, न कि केवल पश्चिमी अनुकरण पर आधारित।

"भारत का समाजशास्त्र भारत की माटी से निकलेगा, न कि यूरोप से आयातित होगा।"

4. भाषा और संस्कृति की स्वतंत्रता

लोहिया ने **हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं** को महत्व देने की बात कही। उनका मानना था कि अंग्रेजी में शासन और शिक्षा, जनतंत्र के विरुद्ध है। उन्होंने 'अंग्रेजी हटाओ आंदोलन' की शुरुआत की।

"अंग्रेज़ी भारत की आत्मा को अपंग बना रही है।"

5. स्त्री मुक्ति और लिंग समानता

लोहिया ने **महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक स्वतंत्रता** का समर्थन किया। उनका मानना था कि पुरुष प्रधान व्यवस्था स्त्री के विकास में सबसे बड़ी बाधा है।

"स्त्री की स्वतंत्रता समाज की वास्तविक उन्नति का मापदंड है।"

6. सामाजिक क्रांति की आवश्यकता

लोहिया का भारत एक ऐसा राष्ट्र था जहाँ केवल राजनीतिक क्रांति से नहीं, बल्कि **सामाजिक क्रांति से परिवर्तन** आता है।

उन्होंने:

- जाति व्यवस्था को तोड़ने
- पिछड़ों को राजनीतिक भागीदारी देने

- सामाजिक भेदभाव को समाप्त करने

का समर्थन किया।

7. पश्चिमी पूंजीवाद और साम्यवाद दोनों का विरोध

लोहिया न तो पूंजीवाद के समर्थक थे, न ही वे रूसी साम्यवाद को भारत के लिए उपयुक्त मानते थे। उन्होंने एक 'स्वतंत्र समाजवाद' (Independent Socialism) की अवधारणा दी, जो भारतीय परिस्थिति के अनुकूल हो।

8. छोटे उद्योगों और ग्रामीण विकास पर बल

लोहिया ने औद्योगीकरण के बजाय ग्रामीण कुटीर उद्योगों, कृषि आधारित उत्पादन और विकेन्द्रीकृत अर्थव्यवस्था को महत्व दिया।

उनका मानना था कि बड़े उद्योग बेरोजगारी बढ़ाते हैं और ग्रामीण संसाधनों का शोषण करते हैं।

9. युवा चेतना और संघर्षशील नागरिकता

लोहिया ने युवाओं को समाज परिवर्तन का वाहक माना।

उन्होंने कहा कि नवभारत के निर्माण में युवाओं की नैतिक चेतना, संघर्षशीलता और नेतृत्व अनिवार्य है।

10. भारत एक धर्मनिरपेक्ष, समरसतापूर्ण राष्ट्र

उन्होंने ऐसे भारत की कल्पना की जहाँ धर्म, जाति, लिंग, भाषा के आधार पर कोई भेदभाव न हो।

भारत एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र हो, जहाँ सभी मतों को समान मान्यता हो।

निष्कर्ष:

डॉ. राममनोहर लोहिया का भारत एक ऐसा राष्ट्र है जो:

- सत्ता में विकेंद्रीकरण लाता है
- समता और स्वतंत्रता का संतुलन बनाए रखता है

- भारतीय सांस्कृतिक चेतना के साथ आधुनिक विकास करता है
- महिलाओं, दलितों और पिछड़ों को मुख्यधारा में लाता है
- अंग्रेजी प्रभुत्व को तोड़कर मातृभाषा को स्थान देता है

"लोहिया का भारत – ग्राम से गगन तक, समानता से स्वराज तक, संस्कृति से नवाचार तक एक आत्मनिर्भर, जनोन्मुख भारत।"